[This question paper contains 2 printed pages.]

Sr. No. of Question Paper : 402 **D** **Your Roll No.....**

Unique Paper Code : 290567

Name of the Course : **B.A. (Prog.) Application Course**

Name of the Paper : Creative Writing (Hindi) रचनात्मक लेखन

Semester / Annual : V

Time : 3 Hours Maximum Marks : 50

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित अवधारणाओं में से किन्हीं **चार** पर 100 शब्दों में टिप्पणी लिखिए : (4×5=20)

   (i) रचनात्मक लेखन से तात्पर्य

   (ii) रचनात्मक लेखन के आधार

   (iii) साहित्य क्यों ?

   (iv) पॉपुलर कल्चर और रचनात्मकता

   (v) लोकभाषा और साहित्य

   (vi) रचनात्मक लेखन का अभ्यास

   (vii) भाषण कला

   (viii) पत्रकारिता और रचनात्मकता

2. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर दीजिए : (3×2=6)

   (i) प्रतीक की अवधारणा स्पष्ट करते हुए कोड और संदेश पर विचार कीजिए।

   (ii) शब्दालंकार से क्या तात्पर्य है ? यमक और श्लेष का उदाहरण सहित परिचय दीजिए।

   (iii) शब्द-शक्ति से आप क्या समझते हैं ? रचनात्मक लेखन में कौन-सी शब्द-शक्ति सबसे महत्वपूर्ण मानी जाती है और क्यों ?

   (iv) औपचारिक और अनौपचारिक शैली में उदाहरण सहित अंतर स्पष्ट कीजिए।

P.T.O.

3. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर दीजिए : (5×2=10)

(i) प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की भाषा में क्या अंतर है ? सोदाहरण स्पष्ट कीजिए ।

(ii) धारावाहिक लेखन के मूल तत्वों पर विचार कीजिए ।

(iii) अपनी किसी यात्रा के आधार पर यात्रा वृतांत लिखिए ।

(iv) साक्षात्कार से आप क्या समझते हैं ? साक्षात्कार लेते समय किन सावधानियों का ध्यान रखना चाहिए ?

4. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** पर टिप्पणी कीजिए : (5×2=10)

(i) टेलीविजन समाचार लेखन

(ii) पटकथा लेखन

(iii) 'उत्तराखंड त्रासदी' **अथवा** 'सचिन तेंदुलकर और क्रिकेट' विषय पर फीचर लेखन

(iv) 'भाग मिल्खा भाग' फिल्म की समीक्षा

5. दिए गए अंश के रचनात्मक सौन्दर्य का विश्लेषण कीजिए : (4)

मगर यह जानते हुए कि मैं बेवकूफ बनाया जा रहा हूँ और जो मुझे कहा जा रहा है, वह सब झूठ है- बेवकूफ बनते जाने का एक अपना मज़ा है । यह तपस्या है । मैं इस तपस्या का मज़ा लेने का आदी हो गया हूँ । पर यह महँगा मज़ा है - मानसिक रूप से भी और इस तरह से भी । इसलिए जिनकी हैसियत नहीं है उन्हें यह मज़ा नहीं लेना चाहिए । इसमें मज़ा ही मज़ा नहीं है - करूणा है, मनुष्य की मजबूरियों पर सहानुभूति है, आदमी की पीड़ा की दारूण व्यथा है । यह सस्ता मज़ा नहीं है । जो हैसियत नहीं रखते उनके लिए दो रास्ते हैं - चिढ़ जाएँ या शुद्ध बेवकूफ बन जाएँ ।

अथवा

बहुत दिनों बाद खुला आसमान !
निकली है धूप, हुआ खुश जहान ।
दिखीं दिशाएँ, झलके पेड़,
चरने को चले ढोर-गाय-भैंस-भेड़,
खेलने लगे लड़के छेड़-छेड़,
लड़कियाँ घरों को कर भासमान ।